महत्वपूर्ण एवं खास

सामाजिक सरोकार के मार्मिक चित्र

कथाकार सैली बलजीत के कथा-संग्रह 'घोड़े अब हांफ रहे हैं' में सत्रह कहानियां संकलित हैं। कथाकार के अनुसार इन कहानियों का रचनाकाल उसके सेवानिवृत्ति के बाद का है, जिसमें उस पर नौकरी के अतीत को खंगालने की धुन हावी थी। निःसंदेह संग्रह में कुछ कहानियों का कथ्य कथन के अनुरूप है, परंतु संग्रह में ऐसी कहानियां भी हैं, जिनमें ज्वलंत सामाजिक संदर्भ अपने चुनौतीपूर्ण रूप में उपस्थित हैं। 'वह अब फौलाद हो रहा है' का नायक एसडीओ के रूप में पदोन्नत होकर वहीं नियुक्त हो जाता है जहां कभी वह जूनियर इंजीनियर था। उसे मिलने आए उसके चाचा उसे सलाह देते हैं–'अफसरों जैसी क्वालिटीज लाओ अपने अंदर, अब तुम्हारा रुतबा है।' 'कितने विकल्प' सेवानिवृत्ति के बाद दशा-दिशा का बोध करवाती है। 'अब तो दिन काटना पहाड़ से कम नहीं, नौकरी थी तो टाइम का पता ही नहीं चलता था।' विकल्प तो कई होते हैं, परंतु सच्चाई यह भी तो है–'विकल्पों की बैसाखियों पर कब तक टिक पाएगी जिंदगी?' 'एक नये अध्याय की शुरुआत' में दफ्तरों की वर्तमान कार्यप्रणाली चित्रित है। एक सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी को अपनी पेंशन आदि के लिए लट्टू की भांति घूमना पड़ता है। फाकाकशी का दर्द यों सम्मुख आता है–'हम अफसर यहां आकर चपरासी हो गए हैं और चाबी के खिलौने की तरह दौड़ रहे हैं।'

'घोड़े अब हांफ रहे हैं' में नयी पीढ़ी की कृतघ्नता की भयावह झांकी है। रंजीत तथा उसकी पत्नी के दुर्व्यवहार से पीड़ित होकर पिता वृद्धाश्रम को अपना घर बना लेता है। लोकापवाद से भयभीत बेटा दुनियादारी की दुहाई देने आया। शायद उसे चिंता उस मकान की थी, जिस पर अब भी पिता का कानूनी अधिकार था। जाड़े की ठिठुरती रात को धक्केमार कर निकाले गए पिता की व्यथा इन शब्दों में सम्मुख आती है–'मेरी दुनिया में फिर कभी आग लगाने मत आना, मेरे मरने पर भी नहीं–बहुत हैं यहां अर्थों को कंधा देने वाले–मकान किसी जरूरतमंद को दान कर दूंगा।' कहानी में नग्न सत्य यों उद्घाटित हुआ है–'इस दुनिया में सब रिश्ते झूठे हैं। सभी रिश्तों की बुनियाद स्वार्थ पर टिकी है। सभी अपने-अपने स्वार्थों के गुम्बदों पर चढ़े हुए, झूठी जिंदगी जी रहे हैं।'

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का नारा वोट बैंक का ही द्वार खोलता है। वास्तविकता तो यह है कि संस्कारों की विरासत के दावेदार भारत देश में आज बिटिया-महिला दरिंदगी का शिकार हो रही है। विश्वभर में आज यह प्रश्न उठ रहा है। 'मुझे बचा लिया होता पापा' यह उलाहना वर्माजी के कानों में गूंज रहा था। एक बहुत बड़ी कोठी के पिछवाड़े में खुदाई पर बीस बच्चियों के शव मिले थे। वर्माजी की बच्ची का शव भी इनमें था। विकृत थे सभी शव–'टूटी हुई चूड़ियां, फटी हुई फ्रॉकें, टुकड़े-टुकड़े हुए जिस्म–खून के चकत्ते, विकृत हुए चेहरे–अनेक गाथाएं कह रही थीं।' कथाकार की मानसिक वेदना सबको झकझोर देती है। न जाने सुप्त प्रजातंत्र कब कुंभकर्णी निद्रा से जागेगा।

भूखा पेट क्या-क्या नहीं करवाता–यही तो संदेश है 'तमाशा नहीं था यह' तथा 'तमाशा खत्म' कहानियों का। पहाड़ देखने में कितने सुंदर लगते हैं, परंतु पर्वतीय प्रदेश में हिम्लण (भूचाल) का कहर कितने भोले-भाले लोगों को लील जाता है। कैसे भयावह दृश्य–'मकान हिलने लगे थे, सरकने लगे थे–एक जोर का धमाका-सा हुआ था, फिर पानी ही पानी, सब खत्म हो गया, देखते ही।'

एक जानकारी ये भी.....

सगाई की अंगूठी बाएं हाथ की तीसरी उंगली में पहनाने का कारण

सगाई शादी से कुछ दिन पहले निभाई जाने वाली एक बहुत ही खूबसूरत प्रथा है. सगाई के दौरान लड़का लड़की एक दूसरे को बाएं हाथ की तीसरी उंगली में अंगूठी पहनाते हैं. पर क्या आपको पता है कि सगाई की अंगूठी बाएं हाथ की तीसरी उंगली में ही क्यों पहनाई जाती है. आज हम आपको इसका कारण बताने जा रहे हैं.

1- रोमन धारणा के अनुसार बाएं हाथ की तीसरी उंगली सीधे दिल से जुड़ी होती है. जो भी व्यक्ति बाएं हाथ की तीसरी उंगली में अंगूठी पहनता है वह आपके दिल के सबसे नजदीक हो जाता है. इसीलिए लड़का लड़की अपने रिश्ते को भी मजबूत बनाने के लिए बाएं हाथ की तीसरी उंगली में अंगूठी पहनाते हैं.

2- चीन के अनुसार अंगूठा माता पिता के लिए, इंडेक्स फिंगर भाई-बहन के लिए, बीच की उंगली खुद के लिए बाएं हाथ की तीसरी उंगली हमसफर के लिए होती है. हाथों की सबसे छोटी उंगली बच्चों के लिए मानी जाती है.

3- भारतीय धारणा के अनुसार बाएं हाथ की तीसरी उंगली का इस्तेमाल सबसे कम किया जाता है. इसलिए महंगी अंगूठी को उसी उंगली में पहना जाता है.

विसंगतियों को बेपर्दा करते व्यंग्य

देश भर में हिंदी साहित्य विशेषकर व्यंग्य विधा में अपनी विशेष पहचान बनाने वाले सुरेश सेठ किसी भी परिचय के मोहताज नहीं हैं। विगत पचास वर्षों से साहित्य सेवा में रत सुरेश सेठ ने चाहे कहानी, आलोचना, नाटक, उपन्यास और अब कविता में भी हाथ अजमाये हैं, लेकिन उनकी प्रिय विधा व्यंग्य ही रही है। अब तक वे 33 पुस्तकें हिंदी साहित्य को समर्पित कर चुके हैं।

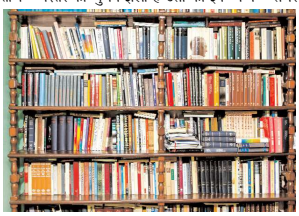

व्यंग्यकार नश्तर या चांटा तो स्वयं पर चलाता है, लेकिन मुस्कान और उंगलियों के निशान दूसरे के चेहरे पर दिखाई देते हैं। इसलिए व्यंग्य लेखन एक कठिन विधा मानी गई है। यह एक प्रकार से तलवार की धार पर चलने के समान है। यदि लेखक थोड़ा-सा भी डगमगाया तो वह संभल नहीं पायेगा। सुरेश सेठ ने इस विधा को बहुत ही सहज और प्रभावी ढंग से अपनाया है। इनके व्यंग्य कथ्य, विविधता एवं प्रस्तुति विशिष्टता, नवीनता के परिचायक हैं। प्रत्येक शीर्षक अपने कथ्य, वस्तु की पहचान सहज ही करा देता है। इन लेखों में लेखक बहुआयामी समस्या को अनेक संदर्भों में व्यंजित करना चाहता है। इनके व्यंग्य जिंदगी की विसंगतियों से सीधे साक्षात्कार का नतीजा है।

'नश्तर की मुस्कान' सुरेश सेठ के 100 व्यंग्य लेखों का संग्रह है। पुस्तक में शामिल इतने अधिक लेखों से ही पता चल जाता है कि उन्होंने कितना लंबा सफर तय किया है। लेखक ने जीवन के हर पहलू–समाज, राजनीति, व्यवस्था, परिवार, संस्कृति और आर्थिक क्षेत्र को खुली आंख से देखकर जो नश्तर की चुभन झेली है उसी को इन व्यंग्य लेखों में प्रस्तुत किया है।

लेखक ने सब से अधिक व्यवस्था, राजनीति व दोगले नेताओं की विसंगतियों को बेपर्दा किया है। लोकतंत्र जिंदाबाद, क्रांतियों की शवयात्रा, अपना देश है बहुत महान, डरे हुए लोग, लो फिर बजा चुनाव का घड़ियाल, नए युग के गदहों की तलाश, आओ स्मार्ट शहरों की तलाश करें, सपनों का नखलिस्तान, खंडित सपनों के मीनार, शिकायत अभी बाकी है, हम इस देश के वासी हैं, लाल बुझक्कड़ों से भरा देश, भिखमंगों का देश, हर शाख पर उल्लू बैठे हैं। राजनीति और राजनेता इतने भ्रष्ट और कुव्यवस्थित हो चुके हैं कि सभी पार्टियां जनता को गुमराह कर, धोखा देकर, फरेब और सब्जबाग दिखा कर सत्ता हथियाना चाहती हैं। सत्ता पर कब्जा होते ही जनता को उसके भाग्य पर छोड़ दिया जाता है। नेताओं का दामन बाहर से सफेद दिखाई देता है लेकिन भीतर कितने घपले और घोटाले सभरे पड़े हैं, यह तो जांच-पड़ताल के बाद ही पता चलता है। 'हर साख पर उल्लू बैठे हैं' लेख में लेखक ने चुनाव में होने वाली धांधली और विसंगतियों का बहुत ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है–'अगर कोई भी पार्टी आपका बोझ सहने के लिए तैयार नहीं तो आप अपनी नई पार्टी खड़ी कर सकते हैं। चुनाव में जब आपकी पार्टी के उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो जाए तो आप क्रांतिहित के लिए अपने दल को विजेता दल में बिना शर्त समाविष्ट करने की घोषणा कर सकते हैं। शर्त न भी रहे उम्मीद तो बनी ही रहती है। कम से कम किसी बोर्ड या संस्था की नंबरदारी तो मिल ही जाएगी।'

सुरेश सेठ ने अपने समय की विसंगतियों, तनावों और विडंबनाओं के चित्रण के लिए आम आदमी के कंधों पर बेताल की तरह सफर किया है। उसके पश्चात शोषित, उत्पीड़ित जनता की आह, कराह, चीख व दर्द इनके व्यंग्यों में नश्तर की मुस्कान बनकर असर डालते हैं। इनके व्यंग्यों की विशेषता है कि वे उथले नहीं हैं। वे पाठक के मन के भीतर तल पर झकझोर कर जीवन की तमाम विसंगतियों के प्रति जागरूक करते हैं। स्वयं पर हंस कर दूसरों को हंसाना साधारण प्रतिभा के रचनाकार के बूते की बात नहीं है। यही विशेषता सुरेश सेठ के व्यंग्य लेखों को महत्वपूर्ण बनाती है।

उफ ये गर्मी

झुलसाती गर्मी अब तक देशभर में सौ से ज्यादा जानें ले चुकी है। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र और उत्तराखंड भी गर्मी से बुरी तरह तप रहे हैं, लेकिन मध्य प्रदेश और राजस्थान में इसका कहर ज्यादा है। रविवार को मध्य प्रदेश का खजुराहो और राजस्थान के बूंदी, झालावाड़ और बारां जिलों में सबसे अधिक 48 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया। वहीं न्यूनतम तापमान सबसे अधिक 31.6 डिग्री सेल्सियस महाराष्ट्र के अकोला और मध्य प्रदेश के सतना में रिकॉर्ड हुआ। दिल्ली के पालम में भी रविवार को 45.8 तापमान रहा। हीट स्ट्रोक, हार्ट अटैक और गर्मी से उपजने वाली दूसरी खतरनाक स्वास्थ्य समस्याओं से अकेले कानपुर में अब तक 25 से ज्यादा लोग जान से हाथ धो चुके हैं। मौसम विभाग का अनुमान है कि इस हफ्ते भी गर्मी से कोई खास राहत नहीं मिलने वाली। हालांकि मौसम विभाग केरल में 29 मई को, यानी आज मानसून आने की भविष्यवाणी पर कायम है। उसका कहना है कि मानसून की रफ्तार अच्छी है और अगले एक-दो दिनों में यह दक्षिणी अरब सागर के कुछ हिस्सों, पूरे कोमोरिन, मालदीव और बंगाल की खाड़ी के दक्षिणी हिस्से में पहुंच सकता है। पिछले दिनों पश्चिमी विक्षोभ के रूप में आए कई तूफानों ने गर्मी से कुछ राहत जरूर दी थी, लेकिन यमन में आए समुद्री चक्रवात मेकुनु ने इसे भी डिस्टर्ब कर दिया है। देश के मैदानी इलाकों में जब-तब हवा का दबाव तो बन रहा है, लेकिन वातावरण में नमी न होने के चलते गर्मी से राहत नहीं मिल पा रही है।

विरोध का दमन लोगों की कीमत पर नहीं चाहिए उद्योग

निश्चित रूप से तूतीकोरिन में स्टरलाइट कॉपर प्लांट का विस्तार रोकने की मांग पर आंदोलनरत लोगों पर गोलीबारी की घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। इस घटना में तेरह लोगों की मौत हुई है। फिलहाल तमिलनाडु के प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने प्लांट को बंद करने के आदेश देकर बिजली कटवा दी है। मगर सवाल यह है कि वेदांता समूह की इस कंपनी के खिलाफ कई महीनों से चल रहे आंदोलन को राज्य सरकार ने गंभीरता से क्यों नहीं लिया।

हालांकि, मार्च से कंपनी में उत्पादन बंद था मगर आंदोलनकारी इस कंपनी के विस्तार को रोकने की मांग कर रहे थे। आरोप है कि फैक्टरी से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों से पानी, हवा व जमीन प्रदूषित हो रही है। कंपनी का दावा है कि वह पर्यावरण से जुड़े सभी मानकों का पालन कर रही है। तमिलनाडु सरकार आरोप लगाती रही है कि आंदोलन में कतिपय राजनीतिक दलों की घुसपैठ के बाद सौ दिन से चला आ रहा आंदोलन मंगलवार को हिंसक हो गया और भीड़ ने जमकर आगजनी की। बहरहाल, उद्योगपतियों, राजनेताओं और पुलिस के गठबंधन से सभी लोग परिचित हैं।

दुनिया की सबसे बड़ी खनन कंपनियों में से एक वेदांता समूह की कई औद्योगिक इकाइयों के विरुद्ध हिंसक प्रदर्शन हुए हैं। पटना में जन्मे अनिल अग्रवाल की कंपनी स्टरलाइट कॉपर प्लांट के खिलाफ आंदोलन से पहले छत्तीसगढ़ व उड़ीसा में भी बड़े आंदोलन हुए हैं। तूतीकोरिन वाले कारखाने में हर साल चार लाख टन तांबे का उत्पादन होता है। कंपनी इसके उत्पादन को दोगुना करना चाहती है। जिसका स्थानीय स्तर पर विरोध हो रहा था। वर्ष 2010 में भी हाईकोर्ट ने फैक्टरी को बंद करने का आदेश दिया था। जिसके खिलाफ कंपनी ने सुप्रीमकोर्ट में अपील दायर कर दी थी। सुप्रीमकोर्ट ने स्टरलाइट फैक्टरी पर सौ करोड़ का जुर्माना लगाया था और कंपनी को अपने ऑपरेशन जारी रखने की इजाजत दे दी। आंदोलनकारियों का कहना है कि सरकार लोगों की सेहत पर पड़ने वाले प्रभाव पर नजर रखने में विफल रही है।

पाकिस्तान की नीयत!

जम्मू-कश्मीर में सीमा पर गोलीबारी रोकने के लिए भारत और पाकिस्तान के सैन्य अभियानों के महानिदेशक (DGMO) 2003 के संघर्ष विराम समझौते को ''पूरी तरह से लागू करने'' पर आज सहमत हुए। कश्मीर में आतंकियों के खिलाफ सरकार ने फिलहाल अपना अभियान रोक लिया है. पवित्र रमजान महीने में शांति एवं सद्भाव के संदेश के तौर पर यह कदम उठाया गया है. लेकिन घाटी में अमन बहाली का मसला तीन तरफा है. किसी सरकारी पहल के परवान चढ़ने की एक शर्त तो यह है कि अलगाववादी रजामंदी दिखाएं. अतिवादियों को पाकिस्तान से मिल रही मदद को रोकना भी जरूरी है. इस सियासी सच को देखते हुए गृहमंत्री राजनाथ सिंह का यह बयान अत्यंत सराहनीय है कि पाकिस्तान संबंधों को सामान्य बनाने के लिए कुछ पहल करे, क्योंकि भारत द्विपक्षीय वार्ता के लिए हमेशा तैयार है. दुर्भाग्य है कि पाकिस्तानी रुख में नरमी के संकेत नहीं हैं.

इस साल के साढ़े चार महीने में पाकिस्तान की ओर से युद्धविराम के उल्लंघन की घटनाओं में पिछले साल के मुकाबले तिगुना इजाफा हुआ है. बीते साल ऐसी 110 घटनाएं हुई थीं, पर इस साल यह आंकड़ा 300 के पार पहुंच रहा है. ऐसी घटनाओं का सीधा रिश्ता आतंकवादियों की घुसपैठ से है. दोनों देशों के बीच भरोसा कायम करने की कोशिशों में ऐसी वारदातें बाधक हैं. पाकिस्तान आधिकारिक तौर पर यह कभी स्वीकार नहीं करता है कि कश्मीर में जारी आतंकवादी घटनाओं के पीछे उसका हाथ है. विकसित देशों का साथी बने रहने और आर्थिक मदद हासिल करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उसे खुद को आतंकवाद के विरुद्ध वैश्विक युद्ध में साझीदार बताकर पेश करने की जरूरत पड़ती है. साथ ही, वह अफगानिस्तान और कश्मीर में चोरी-छिपे आतंकी गतिविधियों को शह भी देता रहता है. उसके इस पाखंड को दुनिया के सामने उजागर करने में हाल के सालों में भारत को कामयाबी भी मिली है. पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के हाल के बयान से भी पाकिस्तान की यह दोरंगी चाल बेनकाब हुई है.

मंत्रालय पर मतभेद

कर्नाटक में नई सरकार के शपथ ग्रहण के हफ्ता बाद भी मंत्रालयों का बंटवारा नहीं हो पाया है। कहा गया था कि शपथ ग्रहण समारोह के बाद ही मंत्रियों के बीच विभागों का बंटवारा हो जाएगा, लेकिन कांग्रेस और जेडीएस में अभी तक इस पर सहमति ही नहीं बन पाई है। अगले कुछ दिनों में भी इस बारे में कोई निर्णय शायद ही हो पाए क्योंकि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी कुछ दिनों के लिए विदेश दौरे पर हैं। आगे कोई फैसला उनके लौटने पर ही किया जाएगा। विभिन्न विभागों की जिम्मेदारी संभालने वाले मंत्रियों के बिना एक राज्य सरकार का इतने दिन काम करना दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा। इस दौरान सरकार न कोई अहम फैसला कर पाएगी, न ही विकास कार्य पटरी पर आ सकेंगे। इस स्थिति से पैदा हुई मुख्यमंत्री की हताशा उनके बयान में झलकती है। एचडी कुमारस्वामी ने कहा कि मैं कांग्रेस की दया पर आश्रित हूं, उसकी अनुमति के बिना कुछ कर नहीं सकता। उन्होंने यह भी कहा कि अगर उनकी पार्टी के घोषणापत्र के मुताबिक जल्द ही किसानों का कर्जा माफ नहीं हो सका, तो वह अपने पद से इस्तीफा दे देंगे। यानी सरकार ढंग से बनी भी नहीं और इस्तीफे की बात शुरू। बताया जा रहा है कि कांग्रेस और जेडीएस में वित्त और गृह

मंत्रालय को लेकर बात अटक गई है। कांग्रेस ये दोनों मंत्रालय अपने पास रखना चाहती है पर जेडीएस इसके लिए तैयार नहीं है। दरअसल सिद्धरामैया सरकार के करीब एक दर्जन मंत्री चुनाव जीते हैं, जिनका पार्टी पर दबाव है। जेडीएस का कई जिलों में कोई विधायक भी नहीं है। कांग्रेस इन जिलों से आए विधायकों को मंत्रिमंडल में जगह देना चाहती है। कर्नाटक में जेडीएस को समर्थन देने के पीछे पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी का तर्क था कि कांग्रेस ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए यह कदम उठाया है। वह राज्य को बीजेपी के सांप्रदायिक शासन से बचाना चाहते हैं। इसका संदेश यह गया कि कांग्रेस ने राष्ट्रीय स्तर पर बीजेपी को शिकस्त देने के लिए जेडीएस का हाथ थामकर भविष्य के लिए एक व्यापक विपक्षी गठबंधन की नींव रखी है। विपक्ष और पूरे देश ने भी यही समझा कि कांग्रेस के लिए गैर-बीजेपी मोर्चा कर्नाटक की सत्ता से ज्यादा अहम है। मगर अब कांग्रेस आलाकमान का रवैया ऐसा लग रहा है कि गठबंधन आज भी उसकी प्राथमिकता में दोयम दर्जे पर है। वह इसे लेकर गंभीर होता तो अपने कर्नाटक के नेताओं की महत्वाकांक्षा पर लगाम लगाता और कुमारस्वामी सरकार को विपक्ष की एक मॉडल सरकार के रूप में देश के सामने पेश करने का प्रयास करता। अभी कर्नाटक में सरकार के सामने कोई मुसीबत आई तो उसका सीधा लाभ बीजेपी को मिलेगा और विपक्षी एकता की संभावनाओं को करारा झटका लगेगा।

खाना-खजाना

इस तरह बनाएं स्वादिष्ट सेवई खीर

यह दूध और सेवई से बनी एक स्वादिष्ट भारतीय मिठाई है और अक्सर दोपहर के भोजन या रात के खाने में मीठे के रूप में खाई जाती है। लोगों को यह बहुत पसंद होती है इसलिए वो इसे ज्यादा खाना पसंद करते है।

सामग्री :-

सेवईयां- 1/2 कप सेविया भुना हुआ

दूध- 7 कप

चीनी- 1/2 कप

इलायची पाउडर- 1/8 चम्मच

केसर लगभग 10-12 स्ट्रिंग्स

पिंच जायफल (जैफेल)

बादाम- 2 चम्मच कटा हुआ

पिस्ता- 1 बड़ा चमचा कटा हुआ

विधि :-

सेवईयां खीर बानाने के लिए एक नॉनस्टिक पैन का प्रयोग करें। उसके बाद इसमें सेवईयां डाले और लगभग दो मिनट तक इसे धीमी आंच पर भूने। फिर इसमें दूध डाले और आंच को थोड़ा सा तेज कर दे। दूध उबालने के बाद आंच को थोड़ा सा कम कर दे। दूध को लगभग 30 मिनट तक उबालें, जब तक कि दूध मलाईदार न हो और लगभग आधा हो जाए। दूध को धीरे-धीरे घुमाते भी रहे ताकि यह नीचे से जलने न लग जाए। इसके बाद चीनी, केसर, इलायची, जायफल, और बादाम डाले दे। अब खीर को लगभग 5 मिनट तक उबाल लें। इसे बाउल में निकाल ले और उसके बाद इसे थोड़ा ठण्डा होने के लिए छोड़ दे। गार्निश के लिए इसमें ऊपर से पिस्ता डाल ले।